हर्ष का मूल्यांकन

सम्राट हर्ष की गणना प्राचीन भारत के महान सम्राटों में की जाती है। वह एक महान विजेता, धर्म-सहिष्णु शासक, बौद्ध धर्म का संरक्षक और उन्नत कोटि का शासन प्रबन्धक था। भारत जो हर्ष से पूर्व बहुसंख्यक छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था, हर्ष के शासनकाल में एकता के सूत्र में आबद्ध हो गया। हर्ष के शासक होने के कारण हूणों का भारत पर आक्रमण करने का साहस न हुआ।

गुप्त सम्राटों के पतन के पश्चात् भारत के बिखरे हुए साम्राज्य को हर्षवर्धन ने ही संगठित किया और अपने साम्राज्य में राजनीतिक एकता स्थापित की। हर्ष कुशल प्रशासक भी था। उसने संपूर्ण साम्राज्य में अत्यंत सुसंगठित और सुदृढ़ शासन-व्यवस्था स्थापित की थी। उसकी सेना का प्रबंध उत्तम कोटि का था। हर्ष साहित्य का अनन्य प्रेमी एवं प्रकांड विद्वान था। उसने तीन ग्रंथों, 'नागानन्द', 'रत्नावली', तथा 'प्रियदर्शिका' की रचना स्वयं की थी। हर्ष अपने राज्य में विद्वानों को राजकीय सम्मान और संरक्षण देता था। उसके दरबार में बाणभट्ट जैसा प्रकांड विद्वान जिसने 'हर्षचरित' एवं 'कादम्बरी' जैसी महान रचनाएं की थी। हर्ष धर्मपरायण, प्रजावत्सल एवं दानी था। डॉ राधाकुमुद मुखर्जी के शब्दों में "हर्ष प्राचीन भारत के इतिहास के श्रेष्ठतम सम्राटों में से है उसमें समुद्रगुप्त और अशोक दोनों ही के गुणों का समावेश था। उसका जीवन हमें पहले की सैनिक उपलब्धियों तथा दूसरे की पवित्रता का स्मरण कराता है।"

Dr. Umesh Kumar Rai
Dept. of History
S.B. College, Ara

B.A. - Part - II
Paper - III (6th-13th early A.D.)
09-02-2024
Class - 02 (Second)

Mob: 8809947478
Email Id:
ukrai.sasaram@gmail.com